सम्पादकीय

भारतीय परम्परा में गुरु का महत्व सर्वोपरि है। गुरु साक्षात ब्रह्म है। वह ईश्वर का ही दूसरा रूप है। गुरु साक्षात है ईश्वर निराकार है। निराकार तक पहुंचने का माध्यम है निराकार अनुभूति का विषय है उसका साक्षात्कार तो भीतर से ही किया जा सकता है। गुरु यही कार्य करता है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं लेना चाहिए कि गुरु साधक और ईश्वर के बीच मध्यस्थ का काम करता है। ईश्वर से साक्षात्कार की यात्रा ऐसी यात्रा है जिसमें किसी तीसरे मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है। गुरु मध्यस्थ नहीं है बल्कि वह साधक का हमसफर है। यात्रा तो प्रत्येक को अपनी-अपनी करनी पड़ेगी। गुरु इस यात्रा में मार्गदर्शक का काम भी करता है। यह परम्परा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलती रहती है। यह अज्ञात से साक्षात्कार और उसका ज्ञान प्राप्त करने की यात्रा है। लेकिन यह तभी संभव है यदि पहले इस संसार से साक्षात्कार कर लिया जाए। इस संसार में रहते हुए आचरण एवं संयम के स्तर पर जीवनयापन की पद्धति को धारण किया जाए। मानवीय वृत्तियों को नियंत्रण में करना एवं संसार में शुद्ध आचरण करना यह इतना सरल काम नहीं है जितना ऊपर से दिखाई देता है। वास्तव में अकाल से साक्षात्कार से पहले की यह प्राथमिक साधना यात्रा है जिसका उतना ही महत्व है जितना दूसरी यात्रा का। बहुत से विद्वान इस प्रथम यात्रा को त्यागकर सीधे दूसरी यात्रा में ही छलांग लगाने की वकालत करते है लेकिन यह आम आदमी के लिए संभव नहीं है। अपवाद की बात क्यों की जाए।

श्री गुरुग्रंथ साहिब को भारतीय दश गुरु परम्परा के उपरान्त साधकों ने गुरु के रूप में स्वीकार किया है। श्री गुरुग्रंथ साहिब इन दोनों यात्राओं का संतुलन बिठाता है। प्रथम गुरु श्री नानकदेव जी ने संसार में रहते हुए ही उस अकाल साधना का समर्थन किया है। संसार को त्यागकर अकाल की साधना करना बेमानी है। इसीलिए श्री नानकदेव जी ने गृहस्थ आश्रम की प्रशंसा की है। जीवन की चौथ में सन्यासी होने की महत्ता इसीलिए है कि उस आयु में मोह-माया से मुक्त हो जाना ही श्रेष्ठकर है। यह मेरा है-इस भाव से मुक्ति अकाल साधना की यात्रा पर सहज भाव में आगे बढ़ने को प्रेरित करती हैं। नवम् गुरु श्री तेगबहादुर जी ने 'सुख-दुख सम करि जानै।।' की जो बात की है वह सन्यासी का ही लक्षण है। गुरु तेगबहादुर जी तो उसे भगवान के समकक्ष ही कहते हैं। श्री गुरुग्रंथ साहिब जीवन के हर पड़ाव पर मार्गदर्शन करता हैं शर्त केवल यही है कि शबद् की साधना की जाए उसे भार की तरह धारण न किया जाए। श्री गुरुग्रंथ साहिब शबद् की साधना का सनातन मार्ग है और यह मार्ग समय और स्थान से निरपेक्ष है। जीवन को अच्छे ढंग से जीने की कला सिखाता है और सुख-दुख के बीच से सम स्थिति में आगे का रास्ता सुझाता है। इसकी प्रासांगिकता केवल पंजाब के लिए नहीं है, केवल पंजाबियों के लिए नहीं है, इसकी प्रासांगिकता पूरे भारतवर्ष के लिए है और यदि आध्यात्मिक क्षेत्र की बात की जाए तो पूरे विश्व के लिए है। शायद इसीलिए पंचम् गुरु श्री अर्जुनदेव जी ने सम्पादन करते समय देश के प्रत्येक भाग के साधकों के अनुभवों को स्थान दिया है। इसीलिए इसकी भाषा भी एक प्रकार से अखिल भारतीय भाषा है। कबीर की भाषा को तो वैसे भी लोग सधुक्कड़ी भाषा कहते हैं। प्रतीक रूप में यदि इसका अर्थ किया जाए तो साधु की भाषा ही सत्य की भाषा होती है। श्री गुरुग्रंथ साहिब की भाषा सत्य की भाषा है। लेकिन उसको समझने के लिए तो साधक को स्वयं ही साधना करनी होगी।

- डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री